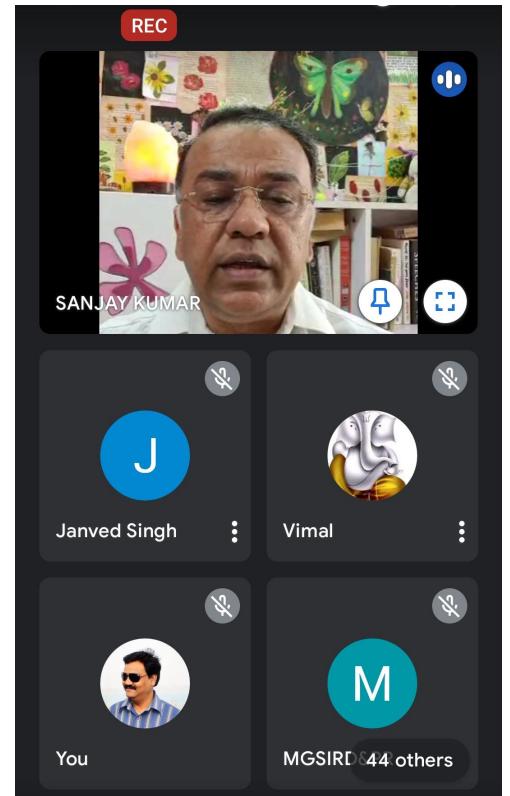


# पहल

ई-समाचार पत्र (मासिक) – सढ़सठवां संस्करण (माह जुलाई, 2021)

→ “पहल” के इस संस्करण में .....

1. अपनी बात ....
2. पंचायतों के लिए नागरिक घोषणा-पत्र (सिटीजन चार्टर) विषय पर ऑनलाइन प्रशिक्षण कार्यक्रम
3. जेन्डर मेनस्ट्रीमिंग (मुख्यधारा)
4. सफलता की कहानी – “समूह के सहयोग से श्रीमती हसीना बी ने लाया आर्थिक और सामाजिक बदलाव”
5. विटामिन और आपका स्वास्थ्य
6. काव्य रचना – कोरोना महामारी
7. मध्यप्रदेश सरकार द्वारा Covid-19 संक्रमण के दौरान उठाए गए कल्याणकारी कदम
8. सफलता की कहानी – पौधा रोपण
9. समूह ने संभाली गेहूं उपार्जन की कमान



## प्रकाशन समिति

### संरक्षक एवं सलाहकार

श्री उमाकांत उमराव (IAS)

प्रमुख सचिव,

मध्यप्रदेश शासन

पंचायत एवं ग्रामीण विकास विभाग

### प्रधान संपादक

श्री संजय कुमार सराफ,

संचालक,

महात्मा गांधी राज्य ग्रामीण विकास

एवं पंचायतराज संस्थान—म.प्र., जबलपुर

### सह संपादक

श्रीमती सुनीता चौबे,

उप संचालक, म.गां.रा.ग्रा.वि.पं.रा.स.—म.प्र., जबलपुर



ई-न्यूज के सम्बन्ध में अपने फीडबैक एवं आलेख छपवाने हेतु कृपया इस पते पर मेल करें—mgsirdpahal@gmail.com

Our official Website : [www.mgsird.org](http://www.mgsird.org), Phone : 0761-2681450 Fax : 761-2681870

Designed & Developed By : Mr. Jay Kumar Shrivastava, Programmer, MGSIRD&PR, JABALPUR





## अपनी बात...



“पहल” मासिक ई-न्यूज लेटर का सढ़सठवां संस्करण का प्रकाशन किया जा रहा है, जो वर्ष 2021 का सातवां मासिक संस्करण है।

इस संस्करण में पंचायती राज मंत्रालय भारत सरकार द्वारा ग्राम पंचायतों के लिए घोषणा-पत्र (सिटीजन चार्टर) तैयार करने हेतु दिशा निर्देश जारी किए गए हैं। यह अभियान 15 अगस्त 2021 से लागू किया जाना है। इस अभियान के सफल संचालन एवं मॉनिटरिंग हेतु संस्थान द्वारा एक दिवसीय ऑनलाइन प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित किया गया, जिसे “पंचायतों के लिए नागरिक घोषणा-पत्र (सिटीजन चार्टर) विषय पर ऑनलाइन प्रशिक्षण कार्यक्रम” समाचार आलेख के रूप में शामिल किया गया है।

इसके साथ-साथ “जेन्डर मेनस्ट्रीमिंग (मुख्यधारा)”, “सफलता की कहानी – समूह के सहयोग से श्रीमती हसीना बी ने लाया आर्थिक और सामाजिक बदलाव”, “विटामिन और आपका स्वास्थ्य”, “काव्य रचना – कोरोना महामारी”, “मध्यप्रदेश सरकार द्वारा Covid-19 संक्रमण के दौरान उठाए गए कल्याणकारी कदम”, “सफलता की कहानी – पौधा रोपण” एवं समूह ने संभाली गेहूं उपार्जन की कमान आदि आलेखों को शामिल किया गया है।

मुझे पूर्ण विश्वास है कि ‘पहल’ का यह संस्करण आपको अत्यंत रुचिकर, नवीन उपयोगी एवं आवश्यक जानकारी प्रदान करने वाला रहेगा।

**शुभकामनाओं सहित।**

**संजय कुमार सराफ  
संचालक**



## पंचायतों के लिए नागरिक घोषणा-पत्र (सिटीजन चार्टर) विषय पर ऑनलाइन प्रशिक्षण कार्यक्रम



पंचायती राज मंत्रालय भारत सरकार द्वारा ग्राम पंचायतों के लिए घोषणा-पत्र (सिटीजन चार्टर) तैयार करने हेतु दिशा निर्देश जारी किए गए हैं। यह अभियान 15 अगस्त 2021 से लागू किया जाना है इस अभियान के सफल संचालन एवं मॉनिटरिंग हेतु संस्थान द्वारा ऑनलाइन प्रशिक्षण का आयोजन किया गया।

### राज्य स्तरीय के प्रशिक्षकों का प्रशिक्षण –

दिनांक 5 जुलाई 2021 को पंचायतों के लिए नागरिक घोषणापत्र सिटीजन चार्टर तैयार करने के लिए राज्य स्तरीय के प्रशिक्षकों का एक दिवसीय ऑनलाइन प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित किया गया जिसमें संस्थान एवं अनुषांगिक केंद्रों के अधिकारी, संकाय सदस्य एवं कंप्यूटर प्रोग्रामर को प्रशिक्षित किया गया। इस प्रशिक्षण में कुल 41 प्रतिभागी सम्मिलित हुए।

### जिला पंचायत नोडल अधिकारी, जनपद पंचायत नोडल अधिकारी एवं जनपद पंचायत मास्टर ट्रेनर्स का प्रशिक्षण –

दिनांक 7 जुलाई 2021 को पंचायतों के लिए नागरिक घोषणापत्र सिटीजन चार्टर तैयार करने विषय पर जिला पंचायत नोडल अधिकारी जनपद पंचायत नोडल अधिकारी एवं जनपद पंचायत मास्टर ट्रेनर्स का ऑनलाइन प्रशिक्षण दोपहर 1रु30 से 5रु30 तक आयोजित किया गया। प्रशिक्षण कार्यक्रम का शुभारंभ संचालक महोदय श्री संजय कुमार सराफ द्वारा किया गया। पंचायतों के लिये नागरिक घोषणा-पत्र

(सिटीजन चार्टर) तैयार किये जाने विषय पर संचालक महोदय द्वारा जानकारी प्रदान की गई साथ ही यह बताया गया कि यह कार्यक्रम लोगों की सहभागिता से तैयार किया जाना होगा जिसमें सहभागिता समयबद्धता एवं पारदर्शिता को विशेष स्थान दिया गया है। ऑनलाइन प्रशिक्षण में निम्नलिखित सत्र का संचालन किया गया।

- पंचायतों के लिए नागरिक घोषणापत्र सिटीजन चार्टर अभियान की आवश्यकता परिचय एवं उद्देश्य।
- पंचायतों के लिए नागरिक घोषणापत्र में शामिल किए जाने वाली सेवाएं।
- भूमिका एवं उत्तरदायित्व, केंद्रीय मंत्रालय, राज्य विभाग, नोडल अधिकारी, फैसिलिटेटर एवं फ्रंटलाइन वर्कर।
- पंचायतों के लिए घोषणा पत्र सिटीजन चार्टर समय सीमा।
- ग्राम सभाएं और लोगों की भागीदारी सुनिश्चित करना।
- अभियान पोर्टल से निगरानी।

उपरोक्त ऑनलाइन प्रशिक्षण में 10 जिलों के 57 जनपद पंचायत सम्मिलित सम्मिलित कर 181 प्रतिभागियों का नामांकन किया जाकर प्रशिक्षित किया गया।

सुरेन्द्र प्रजापति  
संकाय सदस्य



## जेन्डर मेनस्ट्रीमिंग (मुख्यधारा)

मेनस्ट्रीमिंग में दो अलग—अलग, लेकिन संबंधित पक्षों का समावेश होता है ।

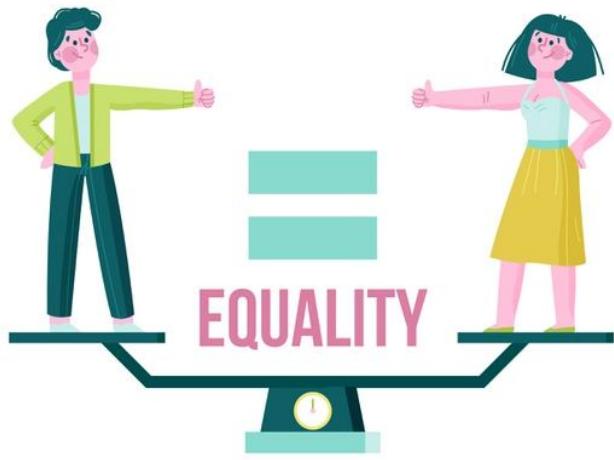
- 1 महिलाओं और उनकी खास समस्याओं और मुददों को मुख्यधारा में लाना (मेनस्ट्रीमिंग करना)
- 2 पुरुषों और महिलाओं की अलग—अलग जरूरतों व इच्छाओं और नीतियों और कार्यक्रमों का उन पर अलग—अलग पड़ने वाले प्रभावों की पहचान करने वाले माध्यम के रूप में जेन्डर को मुख्यधारा में लाना (मेनस्ट्रीमिंग करना) ।

महिलाओं के दृष्टिकोण को सभी विकास की प्रक्रियाओं में उत्प्रेरक, सहभागी और ग्रहणकर्ता के रूप में मुख्यधारा में लाना सुनिश्चित करने के लिए नीतियों, कार्यक्रमों और व्यवस्थाओं का गठन करना जरूरी होगा । नीतियों और कार्यक्रमों में जहां भी कमी हो, इन्हें कम करने के लिए वहां महिलाओं के लिए खास हस्तक्षेपों की जरूरत होगी । ऐसी मेनस्ट्रीमिंग के तरीकों की प्रगति को समय समय पर मापने के लिए इनके अनुश्रवण करने वाले तरीकों को भी तय करना होगा । इससे महिलाओं के मुद्दे और चिन्ताएं स्वयं ही हल होंगी और उनका प्रभाव सभी जुड़े कानूनों, कार्यक्षेत्रों में नजर आएंगा इसलिये विकास के हस्तक्षेप जो पुरुषों और महिलाओं के बीच के अंतर को ध्यान में नहीं रखते अक्सर अपने विकास लक्ष्य को प्राप्त करने में असफल होते हैं ।

सत्ता और निर्णय प्रक्रिया का सभी स्तरों पर बराबरी में बंटवारा सरकार और अन्य उन लोगों पर निर्भर करता है जो सांख्यिकीय जेन्डर विश्लेषण और कार्यक्रमों को कार्यान्वित करने में जेन्डर दृष्टिकोण को मुख्य धारा में लाने का प्रयास कर सकते हैं । आज भी आर्थिक और सामाजिक क्षेत्रों में पुरुषों और महिलाओं के मुद्दों को बराबर समझते हुए किस तरह प्रस्तुत किया जाए इस पर ज्ञान पर्याप्त नहीं है । खास कर निर्णय लेने के महत्वपूर्ण क्षेत्र में भी उपलब्ध आंकड़ों का अपर्याप्त इस्तेमाल होता है । महिलाओं और पुरुषों के बीच हर स्तर पर सत्ता और निर्णय लेने में गैरबराबरी को हल करने के लिए सरकार और अन्य कर्ताओं को सक्रिय और स्पष्ट रूप से सभी नीतियों और कार्यक्रमों में जेन्डर दृष्टिकोण को मुख्यधारा में लाने के लिये प्रोत्साहित करना चाहिए ताकि हर स्तर पर निर्णय लेने से पहले पुरुषों और महिलाओं पर पड़ने वाले प्रभावों का विश्लेषण किया जाए ।

### जेन्डर मेनस्ट्रीमिंग क्या है?

जेन्डर मेनस्ट्रीमिंग को जेन्डर बराबरी को प्रोत्साहित करने वाली रणनीति के रूप में वैशिक स्तर पर स्वीकार किया गया है । मेनस्ट्रीमिंग अपने आप में एक अंत नहीं है, बल्कि यह जेन्डर बराबरी के लक्ष्य को प्राप्त करने का एक माध्यम है । मेनस्ट्रीमिंग का मतलब केवल महिलाओं को या 'जेन्डर बराबरी' को मौजूदा गतिविधियों में शामिल करना नहीं है बल्कि यह संसाधनों का बंटवारा और कार्यक्रमों और परियोजनाओं की योजना बनाने, क्रियान्वयन होने और अनुश्रवण में जेन्डर दृष्टिकोण



और जेन्डर बराबरी के लक्ष्य पर ध्यान केन्द्रित करने की तरफ इशारा करता है।

जेन्डर मेनस्ट्रीमिंग अलग—अलग स्तरों पर सकारात्मक गतिविधियों को आमंत्रित करता है और इस के लिये वचनबद्धता, क्षमताओं और संसाधनों की जरूरत होती है जैसे —

- 1 **नीतियों के स्तर पर** ताकि जेन्डर बराबरी के मुददे को नीतियों और योजनाओं में एक दृश्य और मुख्य मुददा बनना सुनिश्चित किया जा सके।
- 2 **कार्यक्रमों के स्तर पर**, ताकि यू. एन. डी. पी. द्वारा समर्थन प्राप्त सभी हस्तक्षेपों में महिलाओं के सशक्तिकरण के अवसर पैदा किये जा सके और जेन्डर बराबरी को सरल बनाना सुनिश्चित किया जा सके।
- 3 **संगठनों के स्तर पर**, ताकि हर स्तर पर महिलाओं और पुरुषों के लिए सीखने, और आगे बढ़ने तथा संगठनों के उद्देश्यों के प्रति योगदान करने के लिए बराबरी के अवसर पैदा करना सुनिश्चित किया जा सके।

### **मेनस्ट्रीमिंग के मूलभूत सिद्धांत**

महिलाओं की तरकी के लिए काम करने वाले संयुक्त राष्ट्र के विभाग की निर्देशक रही, कैरोलीन हैनन के अनुसार जेन्डर मेनस्ट्रीमिंग को कार्यान्वित करने की जिम्मेदारी पूरी व्यवस्था की होती है और यह संस्थाओं के सबसे ऊपरी स्तरों पर टिकी रहती है। अन्य सिद्धांतों में निम्नलिखित शामिल हैं —

- 1 प्रगति के अनुश्रवण के लिए पर्याप्त उत्तरदायित्व के तरीकों को स्थापित करने की जरूरत होगी।
- 2 कार्य के सभी क्षेत्रों में मुददों और समस्याओं को आंकने की शुरूआती प्रक्रिया ऐसी होनी चाहिए जिसमें जेन्डर अंतर और गैरबराबरी की जांच (स्पष्ट रूप से पहचान) की जा सके।
- 3 जेन्डर बराबरी के दृष्टिकोण से ऐसा पूर्वानुमान नहीं लगाने चाहिए कि काई भी मुददा या समस्या गैर पक्षपाती है।
- 4 जेन्डर विश्लेषण हमेशा किया जाना चाहिए।
- 5 मेनस्ट्रीमिंग के लिए स्पष्ट राजनीतिक इच्छा शक्ति (इरादा) और पर्याप्त संसाधनों की उपलब्धता महत्वपूर्ण है। इस अवधारणा को वास्तविकता में लागू करने के लिए यह जरूरी हैं और यदि जरूरत हो तो, इसमें अतिरिक्त आर्थिक और मानव संसाधनों भी, शामिल हैं।
- 6 जेन्डर मेनस्ट्रीमिंग में निर्णय लेने की प्रक्रिया के हर स्तर पर महिलाओं की बराबरी की भागीदारी को बढ़ाने वाले प्रयासों की जरूरत होगी।
- 7 यूनाइटेड नेशन्स डेवेलपमेंट प्रोग्राम (यू.एन.डी.पी.) की रणनीति स्पष्ट करती है कि— “एक मूल्य के रूप में जेन्डर बराबरी के लिए प्रतिबद्धता और एक संगठनात्मक लक्ष्य के रूप में जेन्डर बराबरी के लिए प्रतिबद्धता को अलग—अलग नहीं देखा जा सकता — वे एक दूसरे के सहयोगी हैं। इसलिए, जेन्डर मेनस्ट्रीमिंग वह प्रक्रिया है जो इन दोनों को सम्मिलित करती है,



## जेन्डर विश्लेषण

महिलाओं के साथ—साथ पुरुषों की भूमिकाओं, स्थिति, संसाधनों, जरूरतों और प्राथमिकताओं की जांच करना, जेन्डर संवेदनशील ज्ञान को एकत्रित करने का आधार है। इसको हर स्तर के मूल्यांकन और नियोजन में नियमित रूप से शामिल करना चाहिए। जेन्डर विश्लेषण जेन्डर मेनस्ट्रीमिंग के लिए एक महत्वपूर्ण उपकरण है। कुछ विशेषज्ञ व्यवसायी स्पष्ट रूप से सामाजिक जेन्डर विश्लेषण की सलाह देते हैं जिसमें संसाधनों और दायित्वों के विभाजन को निर्धारित करने वाले अंतःसंबंधों – वर्ग, जाति, प्रजाति, गरीबी का स्तर और जेन्डर को भी ध्यान में रखने की जरूरत है। जो निम्नतः है



- 1 महिलाओं और पुरुषों की अलग—अलग भूमिकाओं, दायित्वों, जरूरतों और रूचियों के मूल्यांकन के लिए प्रयोग में लाया जाता है
- 2 संसाधनों और निर्णय लेने की प्रक्रिया तक पहुंच और नियंत्रण के परिप्रेक्ष्य में पुरुषों और महिलाओं के बीच के संबंधों को जांचने—परखने के लिए प्रयोग में में लाया जाता है
- 3 उन प्रक्रियाओं की समझ उभरकर सामने लाएगा जिसके अन्तर्गत जेन्डर संबंधों का बार—बार तोल—मोल किया जाता है और परिणामस्वरूप सामाजिक बनावट, घर का स्वरूप, श्रम शक्ति की संरचना, अनौपचारिक अर्थव्यवस्था की बनावट आदि में परिवर्तन आता है।
- 4 सत्ता संबंधों और महिलाओं द्वारा अनुभव की जाने वाले अधीनता की परिस्थिति का स्पष्ट/दृश्य बनाता है
- 5 विभिन्न प्रकार के पुरुषों और महिलाओं और उनकी परिस्थितियों की विविधताओं का लेखा—जोखा प्राप्त कर सकता है
- 6 कथित गैरपक्षपाती/निष्पक्ष संस्थाओं का आलोचनात्मक विवरण प्रस्तुत करने में सहयोग देता है
- 7 एक ऐसा माध्यम है जिसको निपुणता और सावधानी से किए नियोजन की आवश्यकता है
- 8 हर प्रकार के विकास हेतु होने वाले सहयोग के लिए उचित है क्योंकि विकास हेतु होने वाले हर सहयोग/समर्थन का लोगों पर प्रभाव पड़ता है।

जेन्डर विश्लेषण को समाज के हर स्तर पर और सभी क्षेत्रों में प्रयोग में लाना चाहिए जैसे घरेलू स्तर पर, सामुदायिक स्तर पर, सरकार के स्तर पर और संस्थाओं के स्तर पर। संस्थाओं या संगठनों के भीतर जेन्डर विश्लेषण करने से जेन्डर परिस्थिति का स्पष्ट चित्रण उपलब्ध हो पाएगा और जेन्डर बराबरी के लिए कौन से अगले कदम हो सकते हैं इस पर संकेत मिल पाएंगे। यदि एक संस्था जेन्डर के प्रति संवेदनशील है और जेन्डर बराबरी का पालन करता है तो इसका प्रभाव उसके कार्यक्रमों/हस्तक्षेपों पर भी पड़ेगा। इस तरह वह संस्था जिस समाज में कार्यरत है, वहां जेन्डर बराबरी का योगदान करेगा।

अर्चना कुलश्रेष्ठ  
व्याख्याता



## **सफलता की कहानी – “समूह के सहयोग से श्रीमती हसीना बी ने लाया आर्थिक और सामाजिक बदलाव”**

### **पारिवारिक पृष्ठ—भूमि**

श्रीमती हसीना बी मध्यप्रदेश के विकासखण्ड ग्यारसपुर के ग्राम हैदरगढ़ की निवासी हैं। इनके परिवार में रोजगार का मुख्य साधन खेती—बाड़ी है। परिवार में इनके पति और 02 पुत्र हैं।

श्रीमती हसीना बी ने अपने घर, परिवार, समाज में सम्मान की कमी को बहुत करीब से महसूस किया था। श्रीमती हसीना बी के पति द्वारा खाद, बीज एवं कटाई के समय हारवेस्टर को ठेके पर लेकर कटाई करवाते थे। क्षेत्र के कृषकों से सम्पर्क कम होने के कारण से उन्हें रोजगार कम ही मिल पाता था।

### **आजीविका मिशन के सहयोग से समूह गठन व संचालन**

ग्राम हैदरगढ़ जिला विदिशा में वर्ष 2015 में गरीब महिला स्व—सहायता समूह का गठन हुआ। समूह की सभी दीदियों ने इस समूह में श्रीमती हसीना बी को अध्यक्ष बनाया। स्व—सहायता सूमहों के सफलतापूर्वक संचालित होने बाद ग्राम हैदरगढ़ के सभी समूहों को एकत्रित करके आजीविका ग्राम संगठन बनाया गया।

आसपास की ग्राम पंचायतों के ग्राम संगठनों को मिला कर “उड़ान आजीविका संकुल स्तरीय संगठन” गठित किया गया। ग्राम स्तरीय संगठन और संकुल स्तरीय संगठन में श्रीमती हसीना बी ने संगठन के पदाधिकारी के रूप में अपना दायित्व अच्छे से निभाया है।

समूह संचालन और आर्थिक गतिविधियों के क्रियान्वयन के दौरान इन विषयों की जानकारी और अनुभव श्रीमती हसीना बी को मिला। इन्होंने अपने ज्ञान और अनुभव का उपयोग अपने परिवार को आर्थिक रूप से मजबूत करने व अपने क्षेत्र की स्व—सहायता समूह की महिला सदस्यों को सशक्त करने के लिये किया है।

### **सीखने की ललक**

श्रीमती हसीना बी में नया सीखने की ललक थी। इन्होंने आजीविका मिशन द्वारा आयोजित समूह गठन व संचालन से संबंधित विभिन्न प्रशिक्षण प्राप्त किये। विकासखण्ड ग्यारसपुर के ग्राम हैदरगढ़ में निवासरत श्रीमती हसीन बी द्वारा कृषि सखी का प्रशिक्षण प्राप्त किया।

### **दक्ष प्रशिक्षक की भूमिका**

श्रीमती हसीना बी में अपनी जानकारी और अनुभव को साझा करने का विशेष गुण दिखाई देता है। इन्होंने विकासखण्ड ग्यारहपुर, जिला विदिशा और राज्य स्तर पर भोपाल में भी विभिन्न प्रशिक्षण प्रदान किया।



अपनी जानकारी और अनुभवों को इन्होंने अपने क्षेत्र में बताया। प्रदेश के जिला होशंगाबाद, भोपाल, बड़वानी, ग्वालियर, देवास इत्यादि जिलों में आयोजित समूहों और कौशल विकास से संबंधित विभिन्न विषयों पर प्रशिक्षण दिया। इनके द्वारा उत्तरप्रदेश शासन द्वारा आयोजित प्रशिक्षणों में भी वार्ता दी गई।

श्रीमती हसीना बी ने मध्यप्रदेश दीनदयाल अन्त्योदय राज्य ग्रामीण आजीविका मिशन विदिशा द्वारा आयोजित से 07 दिवसीय कृषि आवासीय प्रशिक्षण दिया। इनके द्वारा द्वारा जल एवं भूमि प्रबंधन संस्थान (वाल्मी), भोपाल में 01 दिवसीय आजीविका मिशन के समस्त कर्मियों को जैविक खेती के बारे में प्रशिक्षण प्रदाय किया गया एवं बरकतउल्लाह विश्वविद्यालय भोपाल में कृषि के छात्रों को जैविक खेती के बारे में प्रशिक्षण प्रदाय किया गया।



### **परामर्शदाता की भूमिका**

सभी समूह की दीदीयों द्वारा सम्मानपूर्वक वार्तालाप की जाती है एवं समूह की दीदीयों को किसी भी कार्य में समस्या आने पर इनसे मार्गदर्शन लिया जाता है। ग्राम के सरपंच व सचिव महोदय द्वारा काफी सम्मानपूर्वक बात की जाती है। स्व—सहायता सूमों, ग्राम संगठन का ग्राम पंचायत के तालमेल बहुत ही अच्छा है। श्रीमती हसीना बी की पहल पर ग्राम पंचायत द्वारा ग्राम संगठन के लिए कार्यालय हेतु भवन उपलब्ध करा दिया गया है।

### **समूह एवं आजीविका से जुड़े विभिन्न कार्यकलापों में संलग्नता**

समूह में शामिल होते ही वर्ष 2016 से श्रीमती हसीना बी समूह के कार्यकलापों में में संलग्न रहती हैं। वे आभा मित्र की भूमिका का निर्वहन करती हैं। साथ—साथ विभिन्न रोजगारोन्मुखी गतिविधियों और नवाचारों में भी संलग्न रहती हैं।

अब तो वे दक्ष प्रशिक्षक की भूमिका में हैं और मास्टर कृषि सखी के रूप में खेती—बाड़ी की जानकारी प्रशिक्षण के माध्यम से देती है।

इन्होंने अपने प्रयासों से जैविक कीटनाशक दवाई निर्माण किया है। यह कीट नाशक दवाई किस तरीके से बनाई जाती है वे लोगों को सिखाती हैं। आजीविका पोषण वाटिका, वर्मी काम्पोस्ट तैयार करना, नाडेप टांका बनाने और उन्हें संचालित करने विषय पर प्रशिक्षण श्रीमती हसीना बी द्वारा दिया जाता है।



## आई. ए. आर. आई. पुसा, नई दिल्ली में जैविक कृषि प्रदर्शनी

श्रीमती हसीना बी द्वारा दिल्ली में आयोजित आजीविका मेले में अपने विदिशा जिले का प्रतिनिधित्व किया गया। श्रीमती हसीना बी द्वारा किए गए कार्य से प्रभावित होकर मास्टर कृषि सखी के रूप में चयनित कर आई. ए. आर. आई. पुसा, नई दिल्ली में जैविक कृषि प्रदर्शनी लगाई गई जिसमें माननीय प्रधानमंत्री महोदय द्वारा 10 मिनिट तक वार्तालाप की गई और मध्यप्रदेश के विदिशा जिले के पहल की सराहना की गई।



### आजीविका के स्त्रोतों में बढ़ोतरी

जब से श्रीमती हसीना बी समूह और कृषि के क्षेत्र से जुड़ी हैं और कृषि सखी के रूप में कार्य कर रही हैं तब से इनके पति का सम्पर्क भी क्षेत्र के बहुत सारे कृषकों से हो गया है। इनके पति को अब कृषि के क्षेत्र में

अच्छा रोजगारोन्मुखी व्यवसाय मिल रहा है। अब इन्हें कृषिगत कार्यों से अच्छा लाभ मिल जाता है जिससे इनके परिवार आर्थिक स्थिति में सुधार हुआ है।

जब श्रीमती हसीना बी समूह से नहीं जुड़ी थीं तब उनके परिवार को गरीबी की मार सहन करना पड़ता था। घर का खर्च चलाने में बहुत सारी मुसीबतें आती थीं। जब से वे समूह से जुड़ी हैं उनकी आर्थिक स्थिति अच्छी होती जा रही है।

पहले घर—गृहस्थी चलाने जिन समस्याओं का सामना करना पड़ रहा था समूह और विभिन्न आजीविका गतिविधियों के सहयोग से उन समस्याओं का निराकरण बहुत हद तक हो गया है। घर के जरूरी खर्चों, बच्चों की पढ़ाई—लिखाई के खर्चों के लिये उनकी आमदानी हो जाती है। मास्टर कृषि सखी के रूप में प्रशिक्षण मानदेय प्राप्त होता है एवं आभासित बनने के बाद प्रतिमाह 2000 रु. का मानदेय प्राप्त होता है इसके साथ ही जैविक कीटनाशक दवा बना कर विक्रय कर आर्थिक स्थिति में सुधार हुआ है।

आज परिवार बहुत खुश है, उनकी आर्थिक स्थिति में सुधार हुआ है। पारिवारिक आय में वृद्धि हुई एवं जागरूकता आई है। श्रीमती हसीना बी द्वारा उत्तरप्रदेश राज्य, प्रदेश के भोपाल, होशंगाबाद, विदिशा, देवास जिलों में जैविक खेती हेतु प्रशिक्षण दिया गया एवं दिल्ली मेले में जैविक खेती हेतु प्रदर्शनी लगायी गयी।



कीटनाशक दवाई बना कर स्वयं की ही नहीं अन्य महिलाओं की आय में वृद्धि कर रही है। जिले के अन्य विभागों द्वारा कृषि कार्य में मास्टर ट्रेनर के रूप में कार्य लिया जा रहा है।

#### आय का विवरण :-

क्र.	आय का विवरण	मासिक आय	वार्षिक आय
1.	मास्टर कृषि सी आर पी	3240	38880
2.	आभा सी आर पी	2000	24000
3.	पति द्वारा कृषि व्यवसाय	11000	96000
	<b>कुल आय:-</b>	<b>16240</b>	<b>158880</b>

#### मान-सम्मान में बढ़ोत्तरी

समूह से जुड़ने के पहले श्रीमती हसीना बी ने अपने घर, परिवार, समाज में सम्मान की कमी को बहुत करीब से महसूस किया था। कृषि सखी एवं आभा मित्र का कार्य करने के उपरान्त ग्रामीण समुदाय में काफी अच्छा सम्मान प्राप्त हुआ है। ग्राम संगठन में अध्यक्ष बनने का सौभाग्य प्राप्त हुआ है।



परिवार में श्रीमती हसीना बी का का सम्मान बढ़ा है। परिवार में भी प्रसन्नता का वातावरण रहता है। स्व-सहायता समूह की महिला सदस्यों, ग्राम पंचायत के प्रतिनिधियों और ग्रामवासियों उन्हें बहुत अच्छा सम्मान मिलता है। आजीविका मिशन के माध्यम से विकासखण्ड, जिला, राज्य स्तर पर उनकी अपनी पहचान बनी है। अन्य राज्यों में भी कुशल प्रशिक्षक, कर्मठ नेत्री के रूप में उन्हें जाना जाता है।

### श्रीमती हसीना बी से मिलती है ये सीख

- ग्रामीण क्षेत्र में निवासरत श्रीमती हसीना बी का परिवार आर्थिक रूप से कमज़ोर था। इनकी आजीविका का मुख्य साधन खेती-बाड़ी से संबंधित था।
- वर्ष 2015 में गरीब महिला स्व-सहायता समूह के सहयोग से इन्होंने आजीविका के क्षेत्र में कार्य करना प्रारंभ किया। स्व-सहायता समूहों का ग्राम संगठन एवं संकुल स्तरीय संगठन खड़ा किया और इन संगठनों के सहयोग से समूह सदस्यों की सहायता कर रहीं हैं।
- नई-नई जानकारी प्राप्त करने और अनुभवों से सीखने की प्रवृत्ति श्रीमती हसीना बी में रही। जिससे इन्होंने विभिन्न विषयों पर ग्राम स्तर से लेकर राज्य स्तर तक के प्रशिक्षण प्राप्त किये।
- श्रीमती हसीना बी में अपनी जानकारी और अनुभव को साझा करने का विशेष गुण दिखाई देता है। परामर्श देने, जानकारी देने, मदद करने और सिखाने के लिये वे हमेशा तैयार रहती हैं।
- आपसी सामन्जस, ग्राम पंचायत से बेहतर तालमेल, लगातार और जीवंत सम्पर्क से उनमें एक प्रभावी नेत्री की छवि दिखाई देती है।
- समूह में शामिल होते ही वर्ष 2016 से श्रीमती हसीना बी समूह के कार्यकलापों में में संलग्न रहती है। वे आमा मित्र की भूमिका का निवर्हन करती हैं। साथ-साथ विभिन्न रोजगारोन्मुखी गतिविधियों और नवाचारों में भी संलग्न रहती हैं।
- अपने प्रयासों से इन्होंने अपने, समूहों और क्षेत्र में आर्थिक और सामाजिक बदलाव लाया है।

डॉ. संजय कुमार राजपूत  
संकाय सदस्य



## विटामिन और आपका स्वास्थ्य

अक्सर हमसे कहाँ जाता है कि अपने भोजन

### विटामिन ए –



में विविधता रखो नहीं तो शरीर में विटामिन की कमी हो जाएंगी। ये बात तो बिल्कुल सही हैं पर क्या हमने कभी ये जानने की कोशिश की कौन से विटामिन की कमी से कौन से रोग हो सकते हैं या किस खाद्य पर्दाथ से कौन सा विटामिन मिलता। सबसे पहले हम जानते हैं कि विटामिन क्या है

विटामिन वे छोटे – छोटे कार्बनिक यौगिक हैं जो हमारे शरीर को सही तरीके से कार्य करने की शक्ति प्रदान करते हैं। मानव शरीर को सेहतमंद रखने के लिए कुछ रसायनों की आवश्यकता होती है जिसमें विटामिन का सबसे महत्वपूर्ण स्थान है।

### विटामिन को दो वर्गों में बँटा गया है –

1 वसा में घुलन”ील विटामिन – ए ,डी , ई , के विटामिन

2 जल में घुलन”ील विटामिन — सी , एवं बी समूह के विटामिन

विटामिन ए दो प्रकार में पाया जाता है , रेटिनॉल और कैरोटिन । विटामिन ए ऑखो के लिए बहुत जरूरी होने के साथ साथ शरीर के अन्य अंगों जैसे त्वचा , बाल , नाखून दॉत , मसूड़ा और हड्डी के लिए भी जरूरी हैं।

### विटामिन ए के कार्य

1 ऑखो के लिए विटामिन ए बहुत आवश्यक पोशक तत्व है ।

2 ब्लड में कैल्शियम का स्तर बनाने में मदद करता है।

3 मॉस पेशियो ओर हड्डी को ताकत देता है ।

4 विटामिन ए त्वचा एवं बालों को स्वस्थ रखने के लिए जरूरी है।

5 नाखून , दॉत , मसूड़े को स्वस्थ रखने के लिए भी विटामिन ए सहायता करता है।

### विटामिन ए के स्रोत –

पीले रंग के फल एवं सब्जी चुकंदर , गाजर , पनीर दूध , टमाटर हरी सब्जीयां ,आदि ।

**विटामिन ए की कमी** – विटामिन ए की कमी से रत्नौधी एवं ऑखो में सफेद धब्बे बन जाते हैं।

### विटामिन बी –

विटामिन बी हमारी कोशिकाओं में पाए जाने वाले जीन, डीएनए को बनाने में एवं उनकी मरम्मत करने में सहायक हैं।इसके कई कॉम्प्लेक्स होते हैं – बी1 ,बी2 , बी3 ,बी5 , बी6 , बी7 ,बी 12 ,



### **विटामिन बी के कार्य –**

- 1 लाल रक्त कणिकाओं का निर्माण
- 2 बुद्धि ,रीढ़ की हड्डी और नसों के कुछ तत्वों को बनाने में मदद करता है।

### **विटामिन बी की कमी –**

- 1 विटामिन बी की कमी से पेट संबंधी परेशानियाँ – भूख न लगना ,दस्त हो सकते हैं।
- 2 विटामिन बी की कमी से बेरी बेरी रोग होता है।
- 3 विटामिन बी की कमी से मॉसपेशिया कमजोर हो जाती है।
- 4 विटामिन बी की कमी से पैरालिसिस या हार्टफेल भी हो सकता है।
- 5 विटामिन बी की कमी से बुद्धि भी मंद हो सकती है।

### **विटामिन बी के स्रोत –**

खमीर , चावल की भूसी , चोकर , दालों के छिलके , अंकुरित अनाज ,दूध ताजी सब्जी , सहजन, गाजर मूंगफली ,अदरक किशमिश केला , खीरा काजू आलू मूली आदि एवं मसंसाहारी पदार्थों जैसे – अण्डा मीट मछली में प्रचुर मात्रा में पाया जाता है।

### **विटामिन सी –**

विटामिन सी भारीर की मूलभूत रासायनिक कियाओं में योगिको का निर्माण व उनका सहयोग करता है। मानव भारीर के सामान्य कामकाज के लिए विटामिन सी एक आव”यक तत्व हैं यह एस्कॉबिक अम्ल है जो हर तरह के सिट्रस फल(खट्टे फल) में पाया जाता है।

### **विटामिन सी के कार्य –**

- 1 तंत्रिकाओं तक संदेश पहुँचाना

- 2 कोशिकाओं को उर्जा देना

- 3 प्रतिरोधक क्षमता की रक्षा करना।

### **विटामिन सी की कमी –**

- 1 विटामिन सी की कमी से स्कर्वी रोग होता है
- 2 विटामिन सी की कमी से हर समय थकान लगती है
- 3 विटामिन सी की कमी से मसूड़ों में दर्द एवं खून आता है
- 4 विटामिन सी की कमी से जोड़ों में दर्द होता है
- 5 विटामिन सी की कमी से पैरों में लाल निरान पड़ जाते हैं
- 6 खांसी जुकाम त्वचा के रोग पेट के रोग भी विटामिन सी की कमी से होते हैं।

### **विटामिन सी के स्रोत –**

सभी खट्टे फल आंवला संतरा , मौसमी , अंगूर बेर अमरुद सेब आदि अनार आम चुकंदर चौलाई पालक पुदिना हरी सब्जीयां अंकुरित अनाज में प्रचुर मात्रा में पाया जाता है।

### **विटामिन डी –**

विटामिन डी शारीरिक विकास के लिए बहुत जरूरी है। सूर्य की किरणें विटामिन डी का सबसे अच्छा श्रोत हैं।





### **विटामिन ई के कार्य –**

- 1 बच्चों के विकास के लिए विटामिन ई बहुत आवश्यक तत्व है।
- 2 हड्डियों के विकास के लिए विटामिन ई जरुरी है।
- 3 कैल्चियम के अवश्यकता में सहायक होता है।

### **विटामिन ई की कमी –**

- 1 हड्डियां पतली एवं कमजोर हो जाती हैं।
- 2 विकास भी अवरुद्ध होता है।

### **विटामिन ई के स्रोत –**

- 1 सूर्य की किरणें सबसे अच्छा स्रोत हैं।
- 2 दूध, मलाई, मक्खन, अण्डे, चिकिन, मछलियां, सेयाबीन, मूँगफली, तिल में भी विटामिन ई पाया जाता है।

### **विटामिन ई –**

विटामिन ई भारीर की रोग प्रतिरोधक क्षमता मजबूत बनाए रखता है। ये भारीर को एलर्जी से भी बचाता है।

### **विटामिन ई के कार्य –**

- 1 कोलेस्ट्रॉल को नियंत्रित रखने में प्रमुख भूमिका निभाता है।
  - 2 एंटीऑक्सीडेंट के रूप में भी कार्य करता है।
  - 3 त्वचा एवं बालों को स्वस्थ्य एवं सौदर्य बढ़ने का कार्य करता है।
- विटामिन ई की कमी –**
- 1 विटामिन ई की कमी से प्रजनन शक्ति कम हो जाती है।
  - 2 व्यक्ति पर उम्र का असर जल्दी हो जाता है।

### **विटामिन ई के स्रोत –**

सूखे मेवे, बादाम अखरोट सूरजमुखी के बीज, शकरकंद, सरसो तेल गेहूँ हरे साग चना जौ खजूर चावल के मांड में विटामिन ई पाया जाता है।

### **विटामिन के –**

विटामिन के भारीर में रक्त प्रवाह को बनाए रखता है। हड्डियों में कैल्चियम और दूसरे खनिज लवणों को पहुँचा कर मजबूती प्रदान करता है।

### **विटामिन के कार्य –**

- 1 विटामिन के चोट लगने पर बहते रक्त को जमने में मदद करता है। अधिक रक्त स्त्राव को रोकता है।
- 2 नियमित रूप से विटामिन के का सेवन करने से हृदय रोग का खतरा कम हो जाता है।
- 3 ऑस्टियोपोरोसिस होने का खतरा कम होता है।
- 4 लीवर को स्वस्थ्य रखता है।



## विटामिन के की कमी –

1 विटामिन के की कमी से रक्त का थक्का नहीं बन पाता जिससे रक्त स्त्राव ज्यादा होता है।

## विटामिन के स्त्रोत –

गोभी , पत्ता गोभी पालक ब्रोकली टमाटर लाल-पीली फँगला मिर्च कीवी अंगूर स्ट्राबेरी सोयाबीन दही चीज पनीर ग्रीन टी छिलके वाले अनाज आदि ।

आमतौर पर लोग भारीर में अलग अलग विटामिन के प्रति जागरुक नहीं रहते जिसकी वजह से भारीर में कई विकार जन्म लेते रहते हैं भारीर में किसी एक विटामिन की कमी से ऐसी समस्या उत्पन्न हो जाती हैं जो कई बार इलाज करने के बाद भी ठीक नहीं होती इसलिए हमें अपने भोजन में विविधता रखनी चाहिएं । संतुलित भोजन हमें पोषिटिकता के साथ साथ स्वास्थ्य भी प्रदान करता है।

डॉ. वंदना तिवारी,  
व्याख्याता

## काव्य रचना

कोरोना की दहशत  
और प्रतिरोध का जूनून  
इस आपदा को परास्त करने की  
लगी है अब धुन ।

इंसान तू अपने जेहन में हौसले  
और हिम्मत को बुन  
यही समय है जब निखार ले  
तू अपने गुण,

तू बुराई बैईमानी छोड़  
अच्छाई ओ सादगी को चुन  
अफवाहों को तू अब छोड़ दे  
सच्चाई और प्रकृति की सुन,

जंग छोड़ दी है कोरोना को  
जड़ से मिटाने की धुन  
तूने विपदा पर जय पाई  
फिर से तू अपनी सुन,

तुझ में है आत्मशक्ति  
और जंग का जुनून  
तो लौटेगी फिर से रौनक  
और धरती की रुनझुन ॥

प्रतीक सोनवलकर, संयुक्त आयुक्त



## मध्यप्रदेश सरकार द्वारा Covid-19 संक्रमण के दौरान उठाए गए कल्याणकारी कदम

### कोविड-19 अनुकंपा नियुक्ति योजना

- शासकीय कर्मचारियों की कोरोना के कारण मृत्यु होने पर उनके परिवार के किसी एक सदस्य को अनुकंपा नियुक्ति। यह योजना सभी शासकीय कर्मचारियों सहित संविदा, दैनिक वेतनभोगी, आउटसोर्स कर्मचारियों पर भी लागू होगी। साथ ही यह योजना सभी पीएसयू और अन्य सरकारी संगठनों पर भी लागू होगी।

### मुख्यमंत्री कोविड-19 विशेष अनुग्रह योजना

- कोविड-19 के कारण शासकीय कर्मचारी की मृत्यु होने पर परिवार और सदस्यों को 5 लाख रुपये तक की वित्तीय मदद। सभी प्रकार के सरकारी कर्मचारी, संविदा, दैनिक वेतनभोगी, आउटसोर्स कर्मचारी इस योजना में पात्र होंगे। यह योजना सभी पीएसयू और अन्य सरकारी संगठनों पर भी लागू होगी।

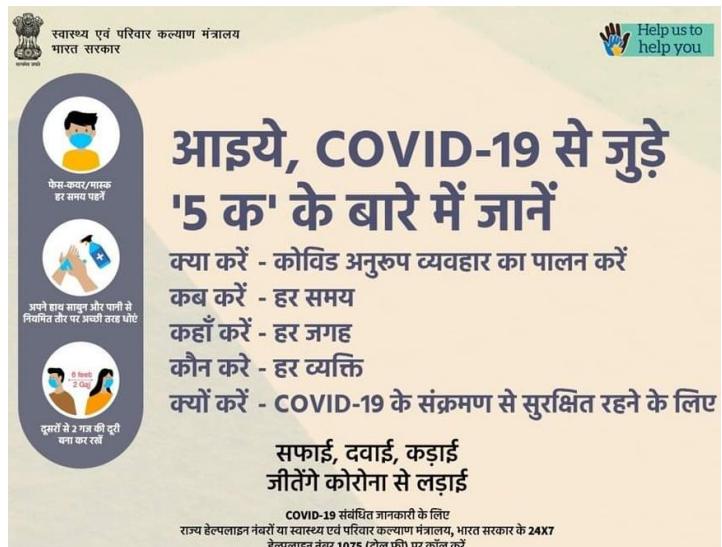
### मुख्यमंत्री कोविड 19 बाल सेवा योजना

1 मार्च 2021 से 30 जून 2021 के मध्य जो बच्चे इस कोविड आपदा में निराश्रित हो गए हैं उनके लिए यह योजना निम्न सहायता सुनिश्चित करेगी—

- रुपये 5000 प्रतिमाह आर्थिक सहयोग
- निःशुल्क शिक्षा
- निःशुल्क राशन
- आवश्यकता होने पर सुरक्षित आवासीय सुविधा।

### किसानों के लिये

- गेहूं एवं अन्य फसलों के उपार्जन के माध्यम से किसानों के खातों में 23 हजार 422 करोड़ रुपए का भुगतान।
- खरीफ 2020 में लिए गए ऋण के भुगतान की अंतिम तिथि को राज्य सरकार ने आगे बढ़ाया ¼ शून्य प्रतिशत ब्याज, फसल ऋण योजना अंतर्गत 1 मार्च से 31 मई ½ इस योजना को 30 जून तक भारत सरकार के निर्देशानुसार आगे बढ़ाया गया।



## **भवन एवं अन्य निर्माण श्रमिकों को वित्तीय सहायता**

- मध्यप्रदेश भवन एवं संनिर्माण श्रमिक कल्याण योजना में अधिसूचित 11.28 लाख श्रमिकों को 1000 रुपए प्रति लाभार्थी के मान से कुल 112.81 करोड़ रुपये की सहायता।

## **मुख्यमंत्री निःशुल्क कोविड योजना**

प्रदेश में आर्थिक रूप से कमजोर परिवार को निःशुल्क कोविड उपचार उपलब्ध कराने के लिए राज्य शासन की योजना—

- प्रदेश के समस्त शासकीय चिकित्सा महाविद्यालय, जिला अस्पताल, सिविल अस्पताल एवं कोविड उपचार कराने वाले समुदायिक स्वास्थ्य केंद्रों पर कोविड मरीजों को पूर्णतः निःशुल्क उपचार उपलब्ध।
- आयुष्मान कार्डधारी परिवारों को आयुष्मान योजना के अंतर्गत संबद्ध निजी अस्पतालों में निःशुल्क उपचार उपलब्ध।
- हेल्पलाइन नंबर 181

## **सार्वजनिक वितरण प्रणाली के अंतर्गत पात्र परिवारों को 3 माह का मुफ्त खाद्यान्न**

- माह अप्रैल, मई एवं जून 2021 में राष्ट्रीय खाद्य सुरक्षा अधिनियम 2013 के अंतर्गत सम्मिलित 4.82 करोड़ पात्र हितग्राहियों को मुफ्त खाद्यान्न का वितरण कराया गया है। साथ ही इन हितग्राहियों को माह मई एवं जून 2021 का प्रधानमंत्री गरीब कल्याण योजना अंतर्गत 10 किलो प्रति हितग्राही मुफ्त खाद्यान्न का वितरण किया जा रहा है। विगत माह लगभग 4.00 लाख नवीन हितग्राहियों को जोड़ गया है एवं यह कार्य निरंतर जारी है।

## **शहरी पथ विक्रेताओं को वित्तीय सहायता**

- शहरी पथ विक्रेता योजना (PM SVA Nidhi) में नामांकित लगभग 6 लाख से अधिक पथ विक्रेताओं को 1000 रुपये प्रति लाभार्थी के मान से कुल 61 करोड़ रुपये का भुगतान।

## **ग्रामीण पथ विक्रेताओं को वित्तीय सहायता**

- मुख्यमंत्री ग्रामीण पथ विक्रेता योजना में 6 लाख से अधिक पथ विक्रेताओं को 1000 रुपये प्रति लाभार्थी के मान से कुल 61 करोड़ रुपये का भुगतान।

## **मुख्यमंत्री कोविड-19 योद्धा कल्याण योजना**

- कोविड-19 छाती पर तैनात फ्रंटलाइन वर्कर की मृत्यु हो जाने पर परिवार को 50 लाख रुपए की वित्तीय सहायता का प्रावधान। (सौजन्य मध्य प्रदेश शासन)

पंकज राय,  
संकाय सदस्य



## सफलता की कहानी – पौधा रोपण

माँ नर्मदा की गोद में बसे खुबसूरत शहर होशंगाबाद के बिकाशखंड सिवनी मालवा में माँ नर्मदा के संरक्षण एवं पुनर्जीवन हेतु म.प्र.जन अभियान परिषद् के द्वारा गठित ग्राम विकास प्रश्फुटन समितियों एवं कई स्थानीय संघठनों द्वारा वर्ष 2016–17 से लगातार माँ नर्मदा के तटों तथा ग्रामों में पोधरोण कार्य किये जा रहे हैं।

जन अभियान परिषद् ब्लाक समन्वयक श्री हरीदास दायमा जी का मानना है कि पर्यावरण या नदी संरक्षण जैसे कार्य सामुदायिक जागरूकता और सहभागिता के बिना सम्भव नहीं हैं। जब आमजन स्वप्रेरणा से किसी सामाजिक जिम्मेदारी को पूरा करने के लिये आगे आते हैं, तो उस अभियान में पूर्ण सफलता प्राप्त होती है। इस तरह के अभियान में लोगों के मन में जिम्मेदारी का भाव, उनकी सोच और मानसिकता में सकारात्मकता तथा उस दिशा में व्यवहार में बदलाव बहुत आवश्यक है।

हम इस अभियान के माध्यम से यही करने का प्रयास कर रहे हैं। हम यह भी मानते हैं कि जनसहयोग के बिना सरकार अकेले कुछ नहीं कर सकती है। हमें इस बात की प्रसन्नता है कि हमें अपार जनसहयोग एवं समर्थन इस अभियान में मिल रहा है। राष्ट्रीय स्तर पर भी इस अभियान में मिले समर्थन से हमारा उत्साह बढ़ा है।



इस कार्य में प्रमुख रूप से हमें एसडीएम सर, सीईओ सर, तहसीलदार सर पुलिस ग्राम पंचायतों से सरपंच, सचिव, ग्राम रोजगार सहायकों प्रश्फुटन समितियों से प्रकाश कुशबाहा (धमासा) योगेन्द्र राजपूत(कोल्नाव), महेंद्र लोवंशी (भरलाय), सौरभ जाटव (सोनखेडी), सौरभ कुमार (कोटलाखेडी), नरेन्द्र दामडे (छापरखेडा), कुमारी चंदा राठोर (खपरिया), आशीष यादव (शिवपुर), आयुष यादव (विसोनीकला) एवं अन्य साथियों का सहयोग मिल रहा है।

### इस कार्य में कुछ संगठनों का सहयोग –

माँ नर्मदा सेवा युवा संगठन भिलाडिया घाट शिवपुर क्षेत्र—

माँ नर्मदा के जल में साफ—सफाई बनाए रखने और घाट को साफ रखने के लिए कुछ युवाओं के दिमाग की उपज थी। माँ के प्रति अपार प्रेम के चलते संगठन का निर्माण हुआ। और संगठन ने लोगों से निवेदन किया कि हमें जल को साफ करने की



आवश्यकता नहीं है। हमें सिर्फ उसे दूषित करना बंद करना होगा। क्योंकि प्रत्येक नदी वर्ष में स्वयं को एक बार स्वतः ही साफ कर लेती है। हमारी कोशिश यह होनी चाहिए कि हम उसे गंदा ना करें।

शुरुआती दौर में अमावस्या के पर्व पर घाट पर श्रद्धालुओं को साफ सफाई स्वच्छ घाट प्रदान करना एवं अमावस्या से एक दिन पूर्व चतुर्दशी पर्व पर मां नर्मदा की भव्य महा आरती करना, यह संगठन के प्रारंभिकता से कार्य संगठन द्वारा किये जा रहे हैं। घर से लाई हुई हवन सामग्री, पालीथिन और ऐसे कुछ पदार्थ जो इको डायवर्सिटी के लिए सही नहीं थे जेसे पॉलिथीन बगैरा इन चीजों को संगठन ने मां नर्मदा के जल में प्रभाहित होने से रोका।

अमावस्या के पर्व पर घाट पर हजारों की संख्या में श्रद्धालु आते हैं एवं मां नर्मदा में आस्था की

दुबकी लगाते हैं घाट पर ही दान ग्राहीयों की पंक्ति बद्ध व्यवस्था संगठन द्वारा की गई जिससे कि अब घाट पर किसी प्रकार की अव्यवस्था नहीं होती है। फिर संगठन का रुझान वृक्षारोपण की ओर हुआ आदरणीय कोशलेश जी तिवारी द्वारा संगठन को मां नर्मदा पवित्र सर्वदा अभियान के तहत जोड़ा गया।

पूर्व कमिशनर महोदय उमाकांत उमराव द्वारा मां नर्मदा को चिरंजीवी बनाए रखने के लिए यह रिपोर्ट जोन का कार्यक्रम प्रारंभ किया। नर्मदापुरम जिले में 68 गांव में यह कार्यक्रम प्रारंभ हुआ। माँ नर्मदा सेवा युवा संगठन को भी इसमें हिस्सेदारी मिली और लगभग 3 एकड़ का भूमि पोधारोपण के लिये मिली। संगठन ने इस भूमि में पौधारोपण और बीजारोपण का कार्य प्रारंभ किया। पौधों की सिंचाई के लिए संगठन जन सहयोग से पानी देने के लिए मोटर





क्रय की और पाइप की सुविधा भी संगठन के द्वारा की। रिपेरियन जोन के कार्य सदस्यों द्वारा प्रति माह की सहयोग राशि देकर किए जाते हैं संगठन के सदस्य प्रतिमाह सदस्यता राशि से रिपेरियन जोन में पौधा संरक्षण, पौधारोपण एवं बीजारोपण का कार्य करते हैं। संगठन द्वारा अब तक 2500 पौधरोपण किये गये हैं। और कुछ पौधे तो अब वृक्ष बन चुके हैं।

गर्मी के समय किसानों द्वारा खेतों की सफाई के लिए नरवाई में आग लगा दी जाती थी। जिससे कि किनारे पर लगे कई सारे पेड़ जलकर धूस्त हो जाया करते थे। परंतु विगत वर्षों से संगठन के द्वारा खेत में पौधों के पास से नरवाई के स्थान पर रोटावेटर करवाया जा रहा है। इससे खेत में लगने वाली आग किनारे लगे पेड़ पौधों को नुकसान नहीं पहुंचा पाती। शिवपुर क्षेत्र के वृक्ष ग्रीष्म ऋतु में भी

खेत में लगने वाली आग से अब सुरक्षित बच जाते हैं। जो पेड़ पौधे खेत के बीचों-बीच लगे हैं संगठन द्वारा उन पेड़ पौधों के चारों तरफ रोटावेटर करके उन्हें भी आग से सुरक्षित कर देता है। इस प्रकार विगत वर्षों से संगठन द्वारा सैकड़ों वृक्षों को बचाया गया है।

विगत कई वर्षों से संगठन रक्षाबंधन के पर्व पर पवित्र बंधन के इस कार्यक्रम को लगाए गए पेड़ पौधों के साथ मनाता रहा है। क्योंकि यह तथ्य है कि सही मायने में पेड़-पौधे ही हमारी रक्षा कर रहे हैं हमारा अस्तित्व उन्हीं के होने से है। संगठन द्वारा कई सारे बीज ग्रीष्म ऋतु में एकत्रित किए जाते हैं एवं उन बीजों को बरसात के आगमन पर भूमि में रोपित कर दिया जाता है रिपेरियन जोन में बीज रोपण का



बहुत ही शानदार परिणाम सामने आया है कई सारे बीज वृक्ष बन चुके हैं।

रिपेरियन जोन की यह भूमि अब इको ट्रॉरिज्म के तहत भिलाडिया घाट को प्रस्तावित कर दी गई है। यहां पर कई प्रकार के मौसमी पक्षी देखने को मिलते हैं एवं भ्रमण के लिए यहां पर कई सारे जीव जंतु आते हैं। पेड़ पौधों के संरक्षण के लिए संगठन के पास अब बहुत सारे यंत्र हैं। जन सहयोग से एवं सदस्यों ने अपनी सदस्यता राशि से सिंचाई के लिए दो मोटर क्रय की है। पानी के लिए पाइप की व्यवस्था है। पौधों की सिंचाई के लिए स्प्रिंगकलर पद्धति उपयोग की जाती है।

मां नर्मदा के तट पर संगठन द्वारा तुलसी के पौधों का रोपण किया गया जिससे कि मां नर्मदा के जल को औषधि युक्त बनाया जा सके। अभी मां नर्मदा के किनारे पर नागर मोहट नामक औषधि अधिक मात्रा में पाई जाती है जो कई सारे गुणों से युक्त है। पेड़ पौधों में समय—समय पर जैविक खाद बायो एवं फलदार पेड़ों की जड़ों में खाद के रूप में किया जाता है यह खाद पेड़ पौधों की वृद्धि में काफी लाभदायक सिद्ध हुई है।

इसके अलावा गांवों की भलाई के लिए संगठन द्वारा आसपास के क्षेत्र में घूम घूम कर वहां के कर्मचारियों एवं गांव के जागरूक नागरिकों को जल संरक्षण के विषय में कार्य करने के लिए प्रोत्साहित किया जाता है। बरसात से पूर्व सभी ग्रामों में बरसात के जल को रोकने के लिए अस्थाई रूप से रेन वाटर हार्वेस्टिंग बनवाने का सुझाव दिया जाता रहा है। एवं संगठन के सदस्यों के घर पर भी रेन वाटर हार्वेस्टिंग

की उचित व्यवस्था उन्होंने स्वयं के माध्यम से की है। बरसात का जल हमारे लिए बहुत महत्वपूर्ण है इसे यदि गांव में ही रोककर भूमिगत कर दिया जाए तो हमारा भूमिगत जलस्तर कभी कम नहीं होगा। अभी भी संगठन द्वारा वृक्षारोपण के लिए सतत कार्य किया जा रहा है।

इस कोरोना काल में भी संगठन के द्वारा कोरोना वालंटियर के रूप में गांव में जागरूकता अभियान, मास्क वितरण अभियान एवं लोगों को सामाजिक दूरी का पालन करवाने का काम भी किया जा रहा है।

प्रातः काल से प्रारंभ हुआ संगठन के कार्य दोपहर में 2:00 बजे तक एवं शाम के 4:00 बजे से 7:00 बजे तक जन जागरूकता का एवं असहाय लोगों की हर संभव मदद करने का प्रयास किया जाता है। गांव में जिन परिवार के पास खाद्यान्न की व्यवस्था नहीं है संगठन उन तक खाद्यान्न की चीजें उपलब्ध कराता है।

संगठन के सदस्यों का जन्मदिन मनाने का तरीका भी बदल गया है सभी ने पाश्चात्य संस्कृति को छोड़कर हमारी अपनी स्वयं की धार्मिक रीति-रिवाजों के साथ साथ जन्मदिन के अवसर पर पौधारोपण को अधिक महत्व दिया है एवं अपने आसपास के सभी लोगों को भी जन्मदिन पर पौधारोपण करने का सुझाव दिया जाता है।

संजय आचार्य  
संकाय सदस्य



## समूह ने संभाली गेहूं उपार्जन की कमान

राजगढ़ के चाटूखेड़ा ग्राम में इस बार समूह के माध्यम से सरकारी गेहूं की खरीदी की जा रही है। शासन द्वारा इस बार गेहूं उपार्जन केंद्र में समूह को अवसर दिया गया है। इसी के तहत राजगढ़ के चाटूखेड़ा ग्राम में अंबिका स्वयं सहायता समूह की महिलाएं गेहूं उपार्जन में लगी हुई हैं।

जिला उपार्जन समिति के चयन के आधार पर आजीविका मिशन से जुड़े अंबिका स्वयं सहायता समूह को 7 ग्रामों की खरीदी का दायित्व सौंपा गया है। यह समूह 571 किसानों के गेहूं का उपार्जन करेगा। समूह द्वारा अब तक 483 किसानों से 22514 किवंटल गेहूं की खरीदी की है। शासन की मंशा महिलाओं के लिए रोजगार के नए अवसर पैदा करने की रही है। इन प्रयासों से महिलाओं को समाज में निर्णायक भूमिका के लिए तैयार किया जा रहा है। समूह की महिलाओं द्वारा गेहूं उपार्जन केंद्र का संचालन करना, इसी भावना की अभिव्यक्ति है। जिला प्रशासन द्वारा सौंपे गए कार्य के तहत समूह की महिलाएं भी उत्साहित होकर कार्य कर रही हैं। समूह द्वारा स्थापित केंद्र का निरीक्षण लगातार वरिष्ठ अधिकारियों द्वारा किया जा रहा है। तथा आवश्यक मार्गदर्शन प्रदान किए जा रहे हैं। समूह द्वारा हासिल उपलब्धि के बाद अगले सीजन में ज्यादा से ज्यादा समूहों को उपार्जन से जोड़ा जाएगा।



समूह की श्रीमती पवित्रा बाई बताती हैं कि काम चुनौतीपूर्ण जरूर है, लेकिन सभी के सहयोग से काम करने में मजा आ रहा है। श्रीमती पवित्रा का कहना है कि हमारी सफलता के बाद अन्य समूह के लिए भी इस कार्य हेतु रास्ते खुलेंगे।

रुषाली पोरस,  
मु.का.अ.ज.प.

